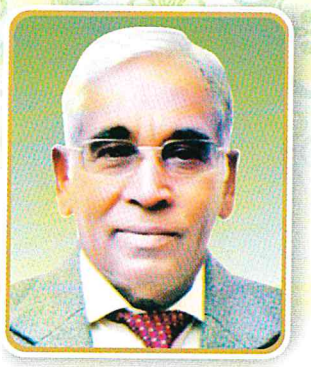
Padma Shri



Shri Mitha Lal Mehta(Posthumous)

Late Shri Mitha Lal Mehta, former Chief Secretary, Government of Rajasthan was a stellar example of pro-people civil servant. His career has been marked by sterling integrity, humanism, high dedication and deep concern for the poor and downtrodden.

2. Born on December 25, 1938, Shri Mehta received his M.Sc degree in Physics in 1960 from University of Rajasthan. He joined Indian Administrative Service in year 1963. He did P.G.Diploma in Urbanization from University of London and also graduated from National Defence College, New Delhi in year 1976. In 1992 he studied International Agriculture at University of Illinois (USA).

3. As Secretary Policy Planning in 1977, Shri Mehta authored and shaped the famous scheme of Antyodaya which brought the last man in the row to the centre. This programme provided a concrete shape to Gandhiji's ideas of poverty alleviation. After its success in Rajasthan, this programme was incorporated in Integrated Rural Development Programme at the Centre and thereafter in SJSY. He contributed significantly to the innovative schemes Shiksha Karmi, Lok Jumbish and Praveshotsava. With innovative thinking, Shri Mehta developed SWACH project in 1986 which helped in eradication of dreaded disease of guinea worm from tribal areas of South Rajasthan. He also designed people-centric innovative scheme of participatory development like Apna gaon- Apna kaam, Gopal, Rajlaxmi and Jan Mangal which received wide acclaim.

4. Shri Mehta's problem solving skills, innovation & creativity and penchant for institutional building shaped and influenced his career both in civil service and outside. After superannuation in 1997, he got fully involved in the task of building new institutions like Eye Banking Society of Rajasthan (encouraging cornea donation), Sumedha (helping needy and talented youth for higher education), Pragati Trust (technology transfer among farmers), Pratham (education of the under-privileged children) and IIHMR (human resource development in health sector). Spearheading the work of Rajasthan Mission on Livelihoods as its executive head during 2004-09 and again from 2013 till his demise, Shri Mehta is credited with doing pioneering work in the field of livelihoods and skill development.

5. Shri Mehta was also on the Board of Directors of Local Board (North region) of Reserve Bank of India and Prasar Bharti, Chairman Forum for Population Action and Chairman, IIHMR University, Jaipur. He also worked as consultant to the World Bank in Kenya and Tanzania.

6. Shri Mehta was honoured with Indira Priyadarshini Vriksha Mitra Award in 1986 for his work on environment. He was also conferred with Mewar Gaurav Award, in 1994 and Acharya Jaimal Gyan Award in 1998.

7. Shri Mehta passed away on December 07, 2014.



श्री मिट्ठा लाल मेहता (मरणोपरांत)

स्वर्गीय श्री मिट्ठा लाल मेहता, राजस्थान की सरकार में पूर्व मुख्य सचिव रहे । आप जन- समर्थक सिविल सेवक की एक शानदार मिसाल रहे । उत्कृष्ट सत्यनिष्ठा, अखण्डता, मानवता, अत्यधिक समर्पण तथा ग़रीब और दलित लोगों से गहरे सरोकार से ओत-प्रोत आपका कॅरिअॅर उल्लेखनीय रहा ।

2. आपका जन्म दिसम्बर 25, 1938 को हुआ । आपने भौतिक विज्ञान में एम.एस.सी. की उपाधि सन् 1960 में राजस्थान विश्वविद्यालय से हासिल की । आप सन् 1963 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में आ गए । आपने लंदन विश्वविद्यालय से शहरीकरण में पोस्टग्रेजुएट डिप्लोमा हासिल किया और सन् 1976 में नेशनल डिफेंस कॉलिज, नई दिल्ली से ग्रेजुएशन भी किया । सन् 1992 में आपने यूनिवर्सिटी ऑव इलिनॉइस (यू एस ए) में अंतरराष्ट्रीय कृषि का अध्ययन किया।

3. सन् 1977 में योजना-आयोग के सचिव के रूप में आपने अंत्योदय की मशहूर योजना की रचना की और उसे स्वरूप प्रदान किया । यह योजना, बुनियादी सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए क़तार में खड़े आखिरी व्यक्ति को अपेक्षित बुनियादी सुविधा मुहैया करवाने में कामयाब रही । इस कार्यक्रम ने गांधी जी के ग़रीबी को कम करने के विचारों को एक ठोस शक्ल दी । राजस्थान में इस कार्यक्रम के सफल रहने के बाद, इसे केन्द्र में एकीकृत ग्रामीण विकास-कार्यक्रम में शामिल किया गया और उसके बाद इसे एस जे एस वाई में शामिल किया गया । आपने शिक्षा-कर्मी, लोक जुम्बिश और प्रवेशोत्सव की नई सोच-समझ से भरी योजनाओं को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान किया । आपने अपनी नवोन्मेषी सोच से सन् 1986 में स्वच्छ परियोजना विकसित की, जिसने दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी क्षेत्रों से गायना की विकराल बीमारी के कीड़े के उन्मूलन की दिशा में बहुत सहायता की । आपने अपना गांव-अपना काम, गोपाल, राजलक्ष्मी और जन-मंगल जैसी सहभागितापूर्ण विकास की जन-केन्द्रित और नई सोच-समझ से युक्त योजनाओं को भी डिज़ाइन किया ।

4. समस्याओं को सुलझाने के आपके कौशल, आपकी नवोन्मेषी सूझ-बूझ, सृजनशीलता और संस्थागत निर्माण के प्रति आपकी अभिरुचि ने सिविल सेवा में और उससे बाहर आपके कॅरिअॅर को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदानकिया और उसे प्रभावित किया । सन् 1997 में अधिवर्षिता की आयु के होने पर अपनी सेवानिवृत्ति के बाद, आप राजस्थान की आई बैंकिंग सोसाइटी (कोर्निया के दान को प्रोत्साहित करने वाली), सुमेधा (ज़रूरतमंद और प्रतिभावान युवकों और युवतियों को उच्चतर शिक्षा हासिल करने में मदद करने वाली), प्रगति ट्रस्ट (किसानों के बीच प्रौद्योगिकी लाने वाली), प्रथम (बुनियादी सुविधाओं से वंचित बच्चों को शिक्षा हासिल करने में मदद करने वाली) और आई आई एच एम आर (स्वास्थ्य के क्षेत्र में मानव संसाधन के विकास के काम में लगी) जैसी नई संस्थाओं को क़ायम करने के काम में पूरी तरह जुट गए । सन् 2004 से 2009 तक की अवधि के दौरान, और फिर 2013 से अपने निधन तक आजीविकाओं के बारे में राजस्थान मिशन (राजस्थान मिशन ऑन लाइवलीहुड्स) के एक कार्यपालक के रूप में उसका नेतृत्व करते हुए, आपको आजीविकाओं और कौशल के विकास के क्षेत्र में अग्रणी कार्य करने का श्रेय हासिल है ।

5. आप भारतीय रिजर्व बैंक के उत्तर क्षेत्र के स्थानीय बोर्ड के निदेशक-बोर्ड और प्रसार भारती के निदेशक-बोर्ड में भी रहे और जनसंख्या-कार्य-मंच के अध्यक्ष तथा आई आई एच एम आर यूनिवर्सिटी, जयपुर के अध्यक्ष रहे । आपने कीनिया और तंज़ानिया में वर्ल्ड बैंक के परामर्शदाता के रूप में भी कार्य किया ।

6. आपको पर्यावरण के बारे में अपने काम के फलस्वरूप सन् 1986 में इन्दिरा प्रियदर्शिनी वृक्ष मित्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया । आपको सन् 1994 में मेवाड़ गौरव पुरस्कार और सन् 1998 में आचार्य जयमल ज्ञान पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया ।

7. दिसम्बर 07, 2014 को आपका निधन हो गया ।